शब्दार्थ

शब्दार्थ करते हैं अन्तर मन का भेदन
धरा का मानव जीवन
शब्दार्थ से ही
चल रहा है ।
शब्दार्थ देते हैं , नवजीवन ।
अर्थ देते हैं,
नव सृजन ।
शब्द हैं, साहित्य सृजन के साधन,
अर्थ पर ही अवलम्बित है ,
ये मानव जीवन।
रहस्यमयी ब्रह्माण्ड में,
गूँज रहे हैं शब्द प्रथम।
फिर भी जग नहीं सुन रहा ,
ये जीवन ग्रंथम् ।
प्रेरणामयी शब्दों से
भरा रहे ये जीवन उपवन ।
सुशब्द सुअर्थ से हो
मानव जीवन का सम्बर्धन।
कोई अदृश्य शक्ति,
शिवशक्ति बनकर,
हाथ पकडकर, राह दिखा दे
कर दे हृदय सागर का मंथन।

शिव कुशवाहा (प्रवक्ता),
हरजेन्द्र नगर, इण्टर कालेज,कानपुर–7